<u>कार्यक्रम-रिपोर्ट</u>

हिंदी विभाग, श्यामलाल कॉलेज द्वारा दिनांक 30 अप्रैल 2026 को आयोजित साहित्यिक गतिविधियों की प्रतियोगिता एवं विशेष व्याख्यान कार्यक्रम

स्वाधीनता आंदोलन में हुआ भक्ति आंदोलन का विस्तार

श्यामलाल कॉलेज के हिंदी विभाग द्वारा दिनांक 30 अप्रैल को एकदिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ अंतर्महाविद्यालयी निबंध प्रतियोगिता और साहित्यिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता से किया गया, जिसमें श्यामलाल कॉलेज के अलावा दूसरे कॉलेजों से आए प्रतिभागियों ने भी भागीदारी की। इसके बाद 'प्रेम का लोकतंत्र और भक्ति साहित्य' विषय पर जाने माने आलोचक बजरंग बिहारी तिवारी ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान की शुरूआत उन्होंने इस प्रस्तावना के साथ की कि भारतीय संस्कृति कविता केंद्रित संस्कृति है। विभिन्नन उदाहरणों के साथ अपनी बात रखते हुए उन्होंने यह कहा कि सत्रहवीं सदी में भक्ति आंदोलन का अवसान नहीं हुआ, बल्कि आगे के युग में उसका पर्यवसान या रूपांतरण होता है। उन्होंने माना कि भारतीय स्वतत्रता आंदोलन में भक्ति आंदोलन का विस्तार हुआ है और इसमें महात्मा गांधी भक्ति आंदोलन के संत सरीखी भूमिका में दिखाई देते हैं। प्रेम विषय पर बोलते हुए वक्ता ने कबीर, मीराबाई, तुलसीदास, सूरदास की कविताओं के साक्ष्यों के अलावा रीतिकाल के महाकवि देव, संस्कृत महाकवि वाल्मीकि, भवभूति, जयदेव, अंग्रेजी महाकवि मिल्टन आदि कवियों की कविताओं और उनके जीवन प्रसंगों को सामने रखते हुए मध्यकाल में प्रेम की महिमा, उसके विस्तार और उसकी चुनौतियों की चर्चा की और वर्तमान में प्रेम की अवधारणा के संकुचित होते जाने पर चिंता व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्रभारी प्रो. समरेंद्र कुमार ने किया और व्याख्यान के समापन पर धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सत्यप्रिय पांडे ने किया। कार्यक्रम के अंत में दोनों प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। पूरे कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों और हिंदी विभाग के सदस्यों के अलावा अन्य विभागों के प्रध्यापकों ने भी उत्साहपूर्वक भागीदारी की।

SLC (University of Delhi)
Shyam Lal College
NAAC A++ & NIRF AIR 68th
श्यामलाल कॉलेज
हिन्दी विभाग
विशेष व्याख्यान एवं साहित्यिक गतिविधियाँ
प्रेम का लोकतंत्र और भक्ति साहित्य
वक्ता : प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी
प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
साहित्यिक गतिविधियां
. निबंध लेखन
. साहित्यिक प्रश्नोत्तरी
30 अप्रैल, 2026
11 : 00 बजे
बोर्ड रूम, श्यामलाल कॉलेज
प्रो. समरेंद्र कुमार
विभाग प्रभारी
प्रो. रबि नारायण कर
प्राचार्य

Shot on OnePlus

Shot on OnePlus

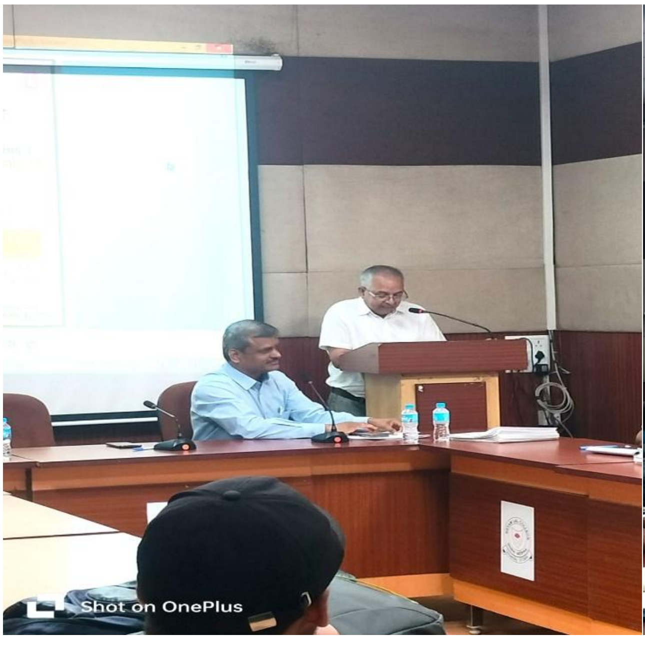
Shot on OnePlus

Shot on OnePlus

SLC (University of Delhi)
Shyam Lal College
श्यामलाल कॉलेज
हिन्दी विभाग
प्रेम का लोकतंत्र और भक्ति साहित्य

श्यामलाल कॉलेज
हिन्दी विभाग
प्रेम का लोकतंत्र और भक्ति साहित्य

श्यामलाल कॉलेज
हिन्दी विभाग
प्रेम का लोकतंत्र और भक्ति साहित्य